19-05-2023

परलाखेमुंडी रेलवे स्टेशन

समाचार पत्रों में क्यों?

इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (INTACH) ने 1899 में बने परलाखेमुंडी रेलवे स्टेशन को गिराए जाने पर आपत्ति जताई है और इसके लिए विरासत का दर्जा मांगा है।

त्वरित मुद्दा?

- गजपति जिले में स्थित, परलाखेमुंडी रेलवे स्टेशन, ओडिशा के सबसे पुराने स्टेशनों में से एक है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- (परलाकिमेडी) परलाखेमुंडी के महाराजा, गौरा चंद्र गजपति नारायण देव द्वितीय ने अपनी राजधानी को नौपाड़ा से जोड़ने का फैसला किया और वर्ष 1899-1900 में पारलाकिमेडी लाइट रेलवे शुरू की।
- 1902 में, ब्रिटिश सरकार ने पारलाकिमेडी लाइट रेलवे का अधिग्रहण किया।
- इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज ने मांग की है कि परलाखेमुंडी रेलवे स्टेशन के रास्ते के कई स्टेशनों, जिनमें पुल पुलिया और अन्य सुविधाएं शामिल हैं, को विरासत के रूप में संरक्षित किया जाना चाहिए और मौजूद स्टेशन किसी भी तरह से ध्वस्त या पुनर्गठित नहीं किया जाना चाहिए। हा स्टेशन का
- इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज;-यह सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत एक गैर-लाभकारी धर्मार्थ संगठन है।
- इसकी स्थापना 1984 में नई दिल्ली में भारत में विरासत जागरूकता और संरक्षण की दृष्टि से की गई थी।
- इसने न केवल हमारी प्राकृतिक और निर्मित विरासत बल्कि अमूर्त विरासत के संरक्षण और संरक्षण का बीड़ा उठाया है।
- 2007 में, संयुक्त राष्ट्र ने इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज को संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद के साथ एक विशेष सलाहकार का दर्जा प्रदान किया।

गोवा - कर्नाटक मंडोवी नदी विवाद

समाचार पत्रों में क्यों?

गोवा महादेई के ऊपरी इलाकों से मलप्रभा बेसिन तक पानी मोड़ने के लिए कलसा भंडुरा नहर के निर्माण की कर्नाटक की योजना से चिंतित है।

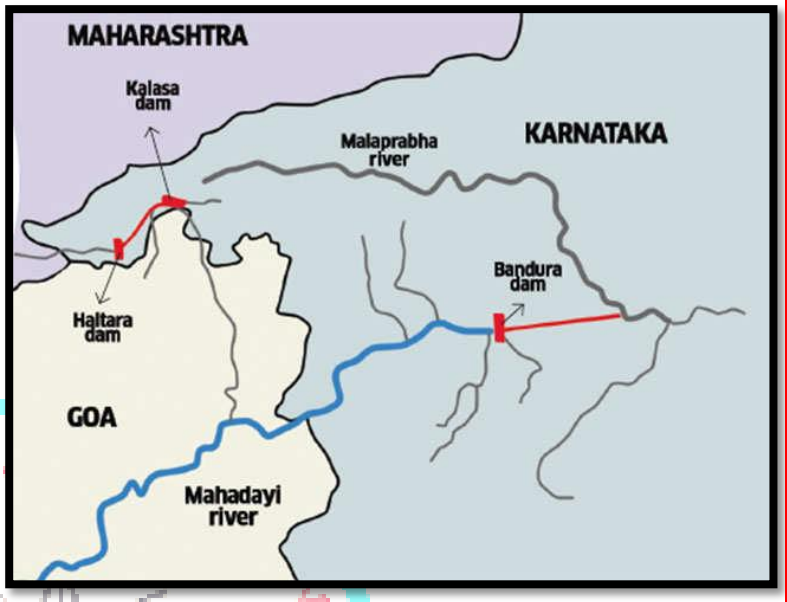

त्वरित मुद्दा?

- कर्नाटक और गोवा की सरकारों के बीच मंडोवी नदी के पानी के बंटवारे को लेकर विवाद है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- कर्नाटक सरकार ने कलासा-बंदूरी नाला परियोजना के हिस्से के रूप में महादेई नदी से कुछ पानी को मालाप्रभा नदी बेसिन में मोड़ने का प्रस्ताव रखा है।
- हाल ही में केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) ने प्रस्तावित परियोजनाओं की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) को मंजूरी दे दी है जिसने गोवा के लिए चिंताएं बढ़ा दी हैं।
- इससे पहले 2018 में, तीन राज्यों (यानी, गोवा, कर्नाटक और महाराष्ट्र) के बीच पानी के आवंटन पर महादेई जल विवाद ट्रिब्यूनल (MWDT) अवार्ड पर सभी पक्षों द्वारा सुप्रीम कोर्ट में सवाल उठाया गया है।
- उमंडोवी नदी को ' गोवा की जीवन रेखा' माना जाता है। इसकी ऊपरी पहुंच में इसे महादेई के नाम से भी जाना जाता है।
- मंडोवी और जुआरी गोवा की दो प्राथमिक नदियाँ हैं।मंडोवी मोरमुगाओ बंदरगाह बनाने वाली एक आम खाड़ी में जुआरी के साथ मिलती है।
- पणजी, राज्य की राजधानी मंडोवी के बाएं किनारे पर स्थित है।नदी कर्नाटक में पश्चिमी घाट में 30 स्प्रिंग के एक समूह से निकलती है।
- अपने रास्ते में नदी दूधसागर जलप्रपात और वरपोहा जलप्रपात बनाती है और कुछ स्थानों पर इसे गोमती के नाम से भी जाना जाता है।
- नदी उत्तर से गोवा में प्रवेश करती है और अंततः अरब सागर में गिरती है।नदी का जलग्रहण क्षेत्र गोवा, कर्नाटक और महाराष्ट्र में फैला हुआ है।
- मंडोवी की सहायक नदियाँ नेरुल, मापुसा, उदनई, दूधसागर नदी, रागदा नदी और कोत्राची नदी हैं।

IT हार्डवेयर के लिए PLI योजना

समाचार पत्रों में क्यों?

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने IT हार्डवेयर निर्माण के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (PLI) योजना के एक अद्यतन संस्करण को मंजूरी दे दी है।

त्वरित मुद्दा?

- IT हार्डवेयर के लिए PLI योजना की शुरुआत मार्च 2021 में की गई थी।इसके अंतर्गत अर्ह कंपनियों, जैसे डेल और फ्लेक्सट्रोनिक्स के लिए घरेलू विनिर्माण में वृद्धिशील निवेश के लिए 4% से अधिक का प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- इस योजना का उद्देश्य घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देना, निर्यात में वृद्धि करना और भारत को IT हार्डवेयर क्षेत्र में एक प्रमुख अग्रणी राष्ट्र बनाना है।
- इस योजना का कार्यकाल छह वर्ष का होगा, जो योग्य कंपनियों को घरेलू IT हार्डवेयर निर्माण में निवेश करने के लिए दीर्घकालिक प्रोत्साहन प्रदान करेगा।
- सरकार ने भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के विकास पर प्रकाश डाला है।
- पिछले 8 वर्षों में 17% मिश्रित वार्षिक वृद्धि दर और 105 बिलियन डॉलर का उत्पादन बेंचमार्क है, जिसमें मोबाइल फोन निर्यात में 11 बिलियन डॉलर शामिल हैं।
- IT हार्डवेयर निर्माण के लिए पीएलआई योजना के लिए बजटीय परिव्यय Rs. 17,000 करोड़ निर्धारित किया गया है।
- घरेलू विनिर्माण में निवेश करने वाली कंपनियों को अधिक लाभ की पेशकश करते हुए प्रोत्साहन दर को बढ़ाकर 5% कर दिया गया है।
- घरेलू रूप से उत्पादित घटकों का उपयोग करने के लिए एक अतिरिक्त वैकल्पिक प्रोत्साहन पेश किया गया है, हालांकि इन प्रोत्साहनों की विशिष्ट दरों को निर्दिष्ट नहीं किया गया है।
- यदि वैकल्पिक प्रोत्साहनों का उद्देश्य के अनुसार उपयोग किया जाता है, तो योजना के तहत कुल प्रोत्साहन राशि 8-9% हो सकती है।
- दूरसंचार हार्डवेयर निर्माण अनुमानित Rs. 900 करोड़ को पार कर Rs. 1,600 करोड़ तक पहुंच गया है।
- कुछ भारतीय कंपनियां दुनिया भर में रेडियो उपकरणों की महत्वपूर्ण निर्यातक बन गई हैं।

तुंगनाथ मंदिर

समाचार पत्रों में क्यों?

गढ़वाल हिमालय के सुरम्य रुद्रप्रयाग जिले में स्थित तुंगनाथ मंदिर (Tungnath temple) ने हाल ही में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के शोधकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है।

त्वरित मुद्दा?

- ASI ने इस मंदिर का अध्ययन किया और पाया कि यह झुका हुआ है।

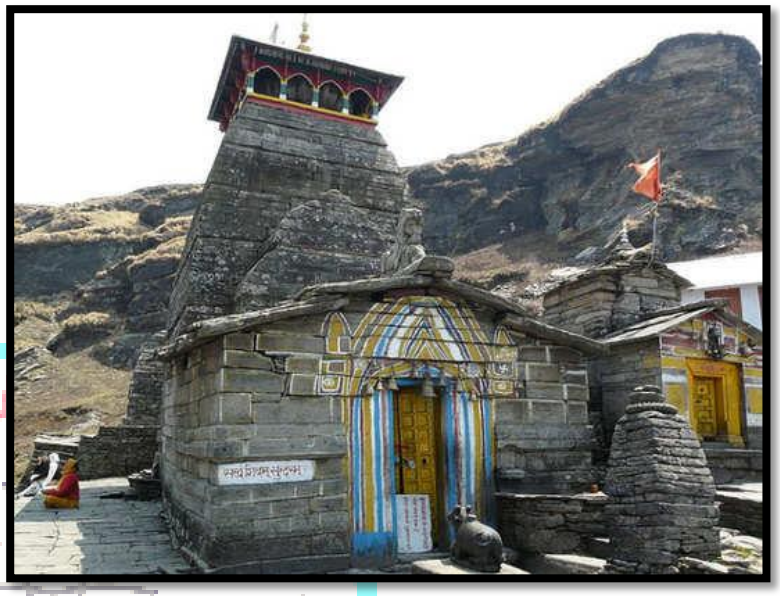

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने तुंगनाथ मंदिर की स्थिति का आकलन करने के लिए एक व्यापक अध्ययन किया।
- मंदिर लगभग पांच से छह डिग्री के झुकाव का अनुभव कर रहा है। इस खोज ने इस श्रद्धेय पूजा स्थल की संरचनात्मक स्थिरता के बारे में चिंता जताई है।
- 12,800 फीट की ऊंचाई पर स्थित, तुंगनाथ मंदिर गढ़वाल हिमालय के बीच वास्तुशिल्प प्रतिभा का प्रमाण है। मंदिर का शांत और विस्मयकारी स्थान इसके आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाता है।
- तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण के महत्व को स्वीकार करते हुए, ASI ने सिफारिश की है कि इसे संरक्षित स्मारक के रूप में शामिल किया जाए।
- इसका उद्देश्य मंदिर की स्थापत्य विरासत की रक्षा करना और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसका संरक्षण सुनिश्चित करना है।
- ASI का सुझाव मिलने पर सरकार ने तुंगनाथ मंदिर को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। प्रक्रिया के हिस्से के रूप में, जनता से आपत्तियां मांगने के लिए एक अधिसूचना जारी की गई है।
- यह समावेशी दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि हितधारकों के पास मंदिर की सुरक्षा के संबंध में अपने दृष्टिकोण और चिंताओं को योगदान देने का अवसर है।
- तुंगनाथ मंदिर धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में अत्यधिक महत्व रखता है। यह दुनिया के सबसे ऊंचे शिव मंदिर के रूप में प्रसिद्ध है, जो भक्तों, तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करता है।
- कत्युरी शासकों द्वारा 8वीं शताब्दी में निर्मित, मंदिर हिमालय क्षेत्र में भक्ति और स्थापत्य प्रतिभा के प्रतीक के रूप में खड़ा है।